'शव काटनेवाला आदमी' उपन्यास में चित्रित सांस्कृतिक जीवन

- दिगंत बोरा

शोध सार :

'संस्कृति' शब्द 'सम' उपसर्ग और 'कृ' धातु के योग से निर्मित है, जिसका शाब्दिक अर्थ होता है- परिष्करण या संस्कार करना। अंग्रेज़ी में इसे 'कल्चर' कहा जाता है। किसी समाज की संस्कृति वह समग्र परंपरा है, जो उसे सभ्यता के धरातल पर प्रतिष्ठित करती है। 'शव काटनेवाला आदमी' उपन्यास में जिन सांस्कृतिक पक्षों का चित्रण हुआ है, वे समाज को संस्कारित और शालीन बनाने में अहम भूमिका निभाते हैं, जैसे - धार्मिक विश्वास, पूजा-पद्धति, लोक परंपराएँ, खान-पान, रहन-सहन, और लोक-मान्यताएँ। अरुणाचल प्रदेश की मोनपा जनजाति की संस्कृति तथा जीवन का इस उपन्यास में यथार्थ वर्णन हुआ है। मोनपा जनजाति के लोगों का धार्मिक आस्था में गहन विश्वास है। उनका जीवन बौद्ध उपासना पद्धतियों, धार्मिक अनुष्ठानों और आध्यात्मिक परंपराओं से गहराई से जुड़ा हुआ है। यहाँ की भौगोलिक परिस्थितियाँ, विशेषकर अत्यधिक ठंड, लोगों की खान-पान संबंधी आदतों को भी प्रभावित करती हैं। मांसाहार और स्थानीय रूप से निर्मित शराब का सेवन यहाँ के जनजीवन का अभिन्न हिस्सा है। अतिथि सत्कार की परंपरा में भी यह स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है, जब किसी आगंतुक या प्रतिष्ठित व्यक्ति का स्वागत स्थानीय शराब से किया जाता है। यह परंपरा न केवल आतिथ्य की भावना को दर्शाती है, बल्कि समुदाय के सांस्कृतिक बोध और सौजन्यता की गहराई को भी उजागर करती है।

बीज शब्द : संस्कृति, मोनपा जनजाति, सामाजिक जीवन, परंपरा, खान-पान, लोक-विश्वास

प्रस्तावना :

संस्कृति किसी भी समाज की पहचान का सबसे बड़ा आधार है। इसी के द्वारा हम अलग-अलग समाज समूदायों में अंतर कर पाते हैं। मनुष्य और संस्कृति एक-दूसरे के अभिन्न अंग है। जहाँ संस्कृति मनुष्य द्वारा निर्मित है। वहाँ मनुष्य को सभ्य बनाने वाले संस्कृति ही है। संस्कृति का शब्दार्थ है उत्तम या सुधरी हुई स्थिति।

येसे दोरजे थोंगछी कृत 'शव काटनेवाला आदमी' मूलतः असमिया भाषा में प्रकाशित उपन्यास है। इस उपन्यास का हिंदी अनुवाद दिनकर कुमार ने किया है। उपन्यास की कथा मोनपा जनजाति की शव काटने की परंपरा पर आधारित है। जिसके इर्द-गिर्द उपन्यास की पूरी कथा घूमती है।

उपन्यास में चित्रित सांस्कृतिक जीवन के अंतर्गत समाज के उन सभी पक्षों का अध्ययन किया जाएगा।

विभिन्न परंपराएँ : 'शव काटनेवाला आदमी' उपन्यास मोनपा जनजाति तथा बौद्ध धर्म पर आधारित समाज और उसकी परंपराओं का सशक्त प्रतिनिधित्व करता है। इस रचना में मोनपा समाज की विविध परंपराओं का अत्यंत जीवंत और यथार्थ चित्रण किया गया है। लेखक ने इस जनजातीय समुदाय में प्रचलित सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक प्रथाओं को गहराई से समझते हुए उनकी प्रस्तुति की है। मोनपा समाज की सांस्कृतिक परंपराओं में मृत्यु से जुड़ी एक विशिष्ट और गहन आस्था निहित है। इस समुदाय में यह विश्वास प्रचलित है कि किसी व्यक्ति की मृत्यु के उपरांत उसके शव को एक सौ आठ टुकड़ों में काटकर पवित्र नदी में प्रवाहित करना एक पुण्य कार्य होता है। यह प्रक्रिया न केवल धार्मिक अनुष्ठान है, बल्कि मृत आत्मा को सदगति दिलाने का एक माध्यम भी मानी जाती है। उपन्यास में इस प्रक्रिया का सजीव चित्रण दारगे नरबू के माध्यम से किया गया है, आगे चलकर दारगे नरबू टोका को भी इस विधि का गूढ़ ज्ञान प्रदान करता है। इस प्रकार, उपन्यास न केवल एक समाज की मृत्यु-संस्कार परंपरा का विवरण देता है, बल्कि उसमें निहित धार्मिक श्रद्धा और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना को भी उजागर करता है। "आओ जव, इस पैर को पकड़ों, बायाँ पैर नहीं, दायाँ पैर। मर्द होने पर पहले दायाँ पैर, दायें हाथ से काटकर शुरु करना चाहिए, औरत होने पर बायी तरफ से शुरुआत करनी चाहिए। सिर के साथ एक सौ आठ टुकड़े करने चाहिए। अच्छी तरह देखना शरीर के किन अंगों को काटकर एक सौ आठ टुकड़े बनाये जाते हैं। साथ-साथ गिनती करना।"[1]

उपन्यास में लेखक ने मोनपा समाज की विवाह परंपरा का भी चित्रण किया है। इस जनजातीय संस्कृति में कुछ विशिष्ट सामाजिक नियम और मान्यताएँ प्रचलित हैं, जिनमें एक यह है कि युवक का विवाह उसकी बुआ की बेटी से होना सामाजिक रूप से स्वीकार्य और उचित माना जाता है। इसी परंपरा का अनुसरण करते हुए उपन्यास में पात्र दारगे नरबू और रिनचिन जोम्बा का विवाह बाल्यावस्था में ही तय कर दिया जाता है। दोनों के मध्य एक सहज, सामाजिक रूप से स्वीकृत संबंध की नींव रख दी जाती है। किंतु नियति को कुछ और ही मंज़ूर होता है। जीवन की विसंगतियाँ और परिस्थितियों के उतार-चढ़ाव उन्हें एक-दूसरे से अलग कर देते हैं। "बुआ की बेटी से ब्याह रचाना मोनपा लोगों का परंपरा है, अर्थात जिस परिवार से माँ आयी है, उसी परिवार में बेटी का ब्याह करने की परंपरा है।"[2]

मोनपा समाज के लोग पारिवारिक रीति-रिवाजों और परंपराओं का अत्यंत श्रद्धा और अनुशासन के साथ पालन करते हैं। उनके सामाजिक ढाँचे में पारिवारिक उत्तराधिकार के संबंध में निश्चित

नियम प्रचलित है, जिनके अनुसार परिवार की पैतृक संपत्ति में बड़े बेटे को अन्य भाई-बहनों की तुलना में अधिक अधिकार दिया जाता है। यह प्रथा न केवल पारिवारिक अनुक्रम का प्रतीक है, बल्कि जिम्मेदारियों के निर्वहन से भी जुड़ी हुई है। उपन्यास में यह परंपरा दारगे नरबू और उसके छोटे भाई येसे खांदु के संबंधों के माध्यम से सजीव रूप से सामने आती है। येसे खांदु अपने बड़े भाई को न केवल सम्मान देता है, बल्कि संपत्ति के बड़े हिस्से को उसे सौंपने के लिए स्वेच्छा से तैयार रहता है। यह भाव इस समाज में भाईचारे, त्याग और परंपरा-पालन की भावना को गहराई से उजागर करता है। "श्राद्ध कर्म संपन्न होने के बाद जब येसे खांदु ने पैतृक घर और दारगे के हिस्से की जमीन सौंप देने की बात कही, तभी अचानक गुईसेंगमू ने ऐतराज जताया। सामाजिक नियमों के अनुसार, पैतृक घर का हकदार बड़ा बेटा था, इसलिए येसे खांदु गाँव का घर छोड़कर तवांग में बनाए गए अपने घर में स्थायी रूप से रहने की पूरी तैयारी कर चुका था।"[3]

मोनपा समाज केवल सामाजिक परंपराओं में ही नहीं, अपितु धार्मिक जीवन में भी गहराई से रचा-बसा हुआ है। इस उपन्यास में लेखक ने न केवल उनकी सामाजिक व्यवस्थाओं का चित्रण किया है, बल्कि उनकी धार्मिक आस्था और परंपरा-पालन की गहनता को भी स्पष्ट रूप से दर्शाया है।

लोक-विश्वास : 'शव काटनेवाला आदमी' उपन्यास में मोनपा जनसमुदाय में व्याप्त लोक-विश्वासों की झलक स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। इन विश्वासों के निर्माण और स्वरूप निर्धारण में धर्म की महत्वपूर्ण भूमिका है। अनेक विश्वासों की जड़ें धार्मिक मान्यताओं में ही निहित होती हैं। इस उपन्यास के माध्यम से मोनपा जनजाति के जिन प्रमुख लोक-विश्वासों का चित्रण मिलता है, उन्हें संक्षेप में निम्नलिखित बिंदुओं में समझा जा सकता है:

भूत-प्रेत : ग्रामीण समाज में भूत-प्रेतों से जुड़ी मान्यताएँ आमतौर पर प्रचलित होती हैं, और 'शव काटनेवाला आदमी' उपन्यास में भी ऐसे विश्वासों की स्पष्ट झलक मिलती है। उपन्यास के अनुसार, ह्रोंगमाँग में शवों का अंतिम संस्कार किया जाता है, स्थानीय लोगों की धारणा में भूत-प्रेत और पिशाचों का निवास स्थान माना जाता है। लोगों का कहना है कि इन अदृश्य शक्तियों को उन्होंने दिन के उजाले में भी देखा है। इन्हीं भयावह शक्तियों से सुरक्षा प्राप्त करने के उद्देश्य से वहाँ एक मने स्तूप का निर्माण किया गया है, जो लोकविश्वास के अनुसार इन आत्माओं को शांत रखने का माध्यम माना जाता है। "कहा जाता है कि धर्माधिकारी लापों रिम्पोसे ने शव सत्कार करने के लिए स्वयं ही ह्रोंगमाँग नामक इस स्थान का चयन किया था। वहीं पर उन्होंने एक स्तुप मने का निर्माण भी किया गया था ताकि यह स्थान भूत-प्रेत, चुड़ैल-

पिशाचिनी आदि से आक्रांत न हो सके। मगर मने रहने के बावजुद कहा जाता है कि वह स्थान भूत, पिशाच, प्रेतात्मा, चुड़ैल आदि का अड्डा बन चुका है। 'ऊँ मने पेमे हूँ' मंत्र जिस शिला लिपि पर खुदा हुआ है, उसके सामने रात में, कभी-कभी शव काटने के लिए जीवित आदमी न रहने पर दिन में ही भूत-प्रेत पासा लेकर जुआ खेलने बैठ जाते हैं। ....गलती से भी कई आदमी अकेले उस तरफ नहीं जाता, जब भी जाना होता है, समूह बनाकर लोग जाते हैं, भगवान का नाम जपते हुए जाते हैं, 'ऊँ मने पेमे हूँ' मंत्र पढ़ते हुए जाते हैं।"[4]

लोगों की मान्यता है कि आऊ थांपा की बेटी रिजोम्बा गूँगी और मंद बुद्धि होने के पीछे भी भूत-प्रेत ही है। "जिस समय आऊ थांपा थांपानांग में उन मृतकों के शवों को काटकर नदी में बहा रहा था, उसी समय लड़की का जन्म होने के कारण उन सारी प्रेतात्माओं का प्रभाव पड़ने के कारण वह मंद बुद्धि वाली बन गयी।"[5]

पूर्वजन्म एवं भाग्यवाद : मोनपा समुदाय के लोग बौद्ध धर्म के अनुयायी हैं, और बौद्ध धर्म पुनर्जन्म तथा मोक्ष के सिद्धांतों पर आधारित है। 'शव काटनेवाला आदमी' उपन्यास में रिनचिन जोम्बा नामक नायिका इसी धार्मिक विश्वास की जीवंत अभिव्यक्ति बनकर सामने आती है। उपन्यास में संकेत मिलता है कि अपने पूर्वजन्म में वह तिब्बत के छारिंग गोम्पा की मठाधिकारी थी, जिसे इस जन्म में दलाई लामा बचपन में ही पहचान लेते हैं। आगे चलकर वह 'आने सांगे' के रूप में प्रतिष्ठित होती है। "आने सांगे ने सभी को बता दिया कि उसका पृथ्वी पर यह आखरी जन्म था, इस मृत्यु के बाद उसकी आत्मा कईपेमे में जाने वाली थी, अर्थात उसकी आत्मा को निर्वाण प्राप्त होनेवाला था, इसलिए उसकी मृत्यु के बाद उसने फिर कहाँ जन्म लिया है, इसके बारे में खोजबीन कर किसी को गोम्पा का मठाधिकारी बनने की जरुरत नहीं है। ....इसलिए अस्थायी मठाधिकारी चुनकर उसके माध्यम से नयी रिम्पोछे ने कहाँ जन्म लिया है, इस बात का पता लगाकर, शिक्षा-दीक्षा नये सिरे से देकर, फिर गोम्पा में बिठाने की जरूरत नहीं है।"[6]

धार्मिक आस्थाएँ एवं उपासना स्थल : धर्म मानव जीवन को दिशा देने वाला, उसके मूल्यों का निर्धारण करने वाला एक प्रमुख मार्गदर्शक तत्व है। धार्मिक क्रियाकलापों के संपादन हेतु एक विशेष स्थान का निर्माण किया जाता है, जिसे उपासना स्थल कहा जाता है। ये स्थल अलग-अलग धर्मों में मंदिर, मस्जिद, गिरजाघर, गोम्पा आदि नामों से जाने जाते हैं।

अरुणाचल प्रदेश की मोनपा जनजाति भी अत्यंत धर्मनिष्ठ मानी जाती है। उनके जीवन के हर महत्वपूर्ण क्षण में धर्म की भूमिका प्रमुख होती है। उदाहरणस्वरूप, किसी शिशु के जन्म के

समय लामा को बुलाकर उसकी जन्म कुंडली देखी जाती है और उसी के आधार पर उसका नामकरण किया जाता है। मोनपा समाज में कुंडली का प्रयोग केवल नामकरण तक सीमित नहीं है, बल्कि मृत्यु के उपरांत अंतिम संस्कार या सत्कार संबंधी निर्णयों में भी कुंडली की भूमिका होती है। "लामाओं ने मो देखकर मेमे चोरगेन कारमा थिनले की मृत्यु के तीन दिन बाद ही शव सत्कार करने की तिथि और समय को निश्चित किया था।"[7]

अन्य समाजों और धर्मों की भाँति मोनपा जनजाति में भी विशेष उपासना स्थलों की परंपरा है, जिन्हें गोम्पा कहा जाता है। मोनपा समाज में किसी भी धार्मिक अनुष्ठान, उपासना या पूजा-पाठ जैसे कार्यों का आयोजन इन्हीं गोम्पाओं में होता है। उपन्यास में आने सांगे जब अपने गाँव लौटती है, तो वे एक गोम्पा का निर्माण करवाती हैं। यह गोम्पा न केवल धार्मिक उपासना का केंद्र बनता है, बल्कि आने सांगे इसके माध्यम से नारी शिक्षा और निःशुल्क चिकित्सा सेवा जैसी सामाजिक पहलों की भी व्यवस्था करती हैं, जो मोनपा समाज में धर्म के साथ-साथ सेवा और जागरूकता के समन्वय को दर्शाता है। "गोम्पा में आने स्त्री शिक्षा के लिए स्कूल खोला, ग्रामीणों का मुफ्त इलाज करने के लिए मोबाईल डिस्पेंसरी खोली और सिर्फ धर्म रक्षा और पूजा पाठ तक ही खुद को सीमित न रखते हुए मानव सेवा में पूरी तरह जुट गयी।"[8]

गोम्पा का निर्माण करने में गाँव लोग आर्थिक, शारीरिक सहायता करते हैं। "समस्त मनपा गाँव की जनता ने प्रत्येक गाँव के लिए समय निर्धारित कर समूह बनाकर निर्माण कार्य में भाग लिया। मूल मंदिर के निर्माण के लिए मिस्त्री, चित्रकार आदि की नियुक्ति और सामग्रियों की खरीदारी के लिए दान-दक्षिणा, विभिन्न संगठनों से आर्थिक सहायता और सरकारी मदद ली गई। जबकि गाँववासियों के श्रमदान के जरिए जंगल की सफाई, पहाड़ी जमीन को समतल बनाना, पत्थर कंकड़, रेत-लकड़ी, बाँस आदि जुटाने का काम किया गया।"[9]

निष्कर्ष :

अरुणाचल प्रदेश की मोनपा जनजाति अपनी विनम्रता, सामाजिक अनुशासन और गहन धार्मिक आस्था के लिए जानी जाती है। यह समुदाय परंपराओं का पालन केवल सामाजिक कर्तव्य के रूप में नहीं, बल्कि उसे जीवन-मूल्य के रूप में स्वीकार करता है। मोनपा समाज पुनर्जन्म के सिद्धांत में विश्वास करता है। इसी धारणा से अनुप्राणित होकर उपन्यास का प्रमुख पात्र दारगे नरबू आजीवन शवों का आदरपूर्वक अंतिम संस्कार करता है, क्योंकि वह इसे मृत आत्मा को सम्मान और मोक्ष प्रदान करने का माध्यम मानता है। मोनपा जनजाति की सांस्कृतिक पहचान उनके रीति-रिवाज़ों के साथ-साथ उनके खान-पान की परंपराओं में भी स्पष्ट झलकती है। इस

क्षेत्र की भौगोलिक परिस्थिति, विशेषकर भीषण ठंड, उनके आहार-व्यवहार को प्रभावित करती है। यहाँ के लोग ऊष्मा प्रदान करने वाले खाद्य पदार्थों का सेवन अधिक करते हैं, जिसमें मांस और स्थानीय रूप से निर्मित शराब प्रमुख हैं। मोनपा समाज में यह परंपरा है कि जब कोई अतिथि या सम्मानित व्यक्ति घर आता है, तो उसका स्वागत आदरपूर्वक शराब प्रदान कर किया जाता है। यह केवल आतिथ्य नहीं, बल्कि सांस्कृतिक सम्मान और सौजन्य का प्रतीक होता है।

संदर्भ सूची :

1. शव काटनेवाला आदमी, येसे दोरजे थोंगछी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2014, पृष्ठ - 94
2. वही, पृष्ठ - 209
3. वही, पृष्ठ -252
4. वही, पृष्ठ - 29
5. वही, पृष्ठ - 46
6. वही, पृष्ठ - 264-265
7. वही, पृष्ठ - 92
8. वही, पृष्ठ - 261
9. वही, पृष्ठ - 259

दिगंत बोरा,
सहायक प्राध्यापक (हिंदी),
जे.डी.एस.जी. महाविद्यालय, बोकाखात, असम